MRS PACKLETIDE'S TIGER SUMMARY IN HINDI

सारांश

श्रीमती पैकलटाइड एक अंग्रेज़ महिला थीं जिन्हे एक बाघ का शिकार करने की तीव्र इच्छा थी। वह स्वभाव से साहसी और जोखिम उठाने वाली महिला नहीं थीं, पर उन्हें अपनी सहेली लूना बिम्बरटन से अत्यधिक द्वेष था। एक अल्जीरियन हवाईजहाज़ चालक लूना को हवाई सैर करवा लाया था। बस, अब श्रीमती पैकलटाइड अपने को उनसे अधिक साहसी दिखाना चाहती थी। उनकी परम इच्छा थी कि उन्हें एक बाघ की खाल मिले जिसे वह अपनी दीवार पर टाँग कर प्रदर्शित कर सकें। अगर वह एक बाघ का शिकार करने में सफल हो जायें तो उनकी तस्वीर समाचार पत्रों में छपे, और वह एक शानदार भोज लूना बिम्बरटन के सम्मान में देंगी, पर जिसमें सब उन्हीं के शिकार के बारे में बात करेंगे और वह एक बाघ के पंजे का ब्रोच लूना को उपहार स्वरूप देने की योजना भी बना रही थीं। उनकी समस्त योजनाएँ लूना के प्रति उनकी इर्ष्या और द्वेष से प्रेरित थी।

परिस्थितियों ने भी उनका साथ दिया। एक अत्यंत कमज़ोर और बूढ़ा बाघ पड़ोस के गाँव में, खाने की खोज में घूम रहा था। श्रीमती पैकलटाइड ने गाँववालों को एक हज़ार रुपयों का पारितोषिक देने की घोषणा की यदि वह बाघ के शिकार में उनकी सहायता करें। एक हज़ार रुपये उन दिनों बहुत होते थे और ग्रामवासी प्रभावित हो गये। उन्होंने बूढ़े बाघ को गाँव में रखने का पूरा प्रयत्न किया। उन्होंने बच्चों को दिन–रात चौकसी करने को कहा जिससे वह बाघ गाँव के अन्दर ही रहे। सस्ती बकरियों को इधर–उधर घूमने दिया जिससे बाघ को अपना भोजन मिलता रहे। माताओं से रात में बच्चों को ज़ोर से लोरी सुनाने पर प्रतिबंध लगाया, जिससे बाघ की निद्रा न भंग हो जाये। सबसे बड़ी परेशानी का कारण उनका यह डर था कि वह बाघ अपनी उम्र के कारण शिकार के पहले ही न मर जाये।

नियति की चुनी वह रात आई और श्रीमती पैकलटाइड अपनी किराये की साथी, कुमारी मेबिन के साथ आई। गाँव वालों ने एक पेड़ पर उनके लिए आरामदायक व सुविधाजनक मचान बनाई। एक बकरी, जो ज़ोर से 'में-में' कर सकती थी, थोड़ी दूर एक पेड़ से बाँध दी गई थी। इतने में बाघ धीरे-धीरे सामने आया और बकरी की ओर बढ़ा। श्रीमती पैकलटाइड ने अपनी बन्दूक से गोली दागी। बाघ एक ओर गिर पड ा। गाँववालों ने ज़ोर-शोर से ढोल पीटने शुरू कर दिये और गाने लगे। श्रीमती पैकलटाइड बहुत ही प्रसन्न थीं।

कुमारी मेबिन एक अत्यन्त चालाक और सतर्क महिला थीं। उन्होंने श्रीमती पैकेलटाइड का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि गोली तो बकरी को लगी और बूढ़ा बाघ गोली की आवाज़ सुनकर दिल के दौरे से मर गया। उन्होंने बतलाया कि बाघ के शरीर पर कोई घाव ही न था। श्रीमती पैकलटाइड को धक्का लगा पर उन्होंने यह सोचकर अपने को सांत्वना दी कि बाघ की खाल तो उनकी थी। गाँववालों ने भी सच को छुपाया क्योंकि उन्हें हज़ार रुपये मिल गये थे। श्रीमती पैकलटाइड को कुमारी मेबिन से कोई डर नहीं था क्योंकि वह उसे वेतन देती थीं।

श्रीमती पैकलटाइड की तस्वीर दो साप्ताहिक अखबारों में निकली। लूना ने खाने का निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया, पर बड़ी रुखाई से बाघ के पन्जों का ब्रोच स्वीकार कर लिया। कुमारी मेबिन पैसों की भूखी और अत्यन्त धूर्त महिला थीं। उसने श्रीमती पैकलटाइड पर दबाव डाल कर धमकी दी कि यदि सच लूना को पता चल गया कि श्रीमती जी ने बकरी को मारा था, बाघ को नहीं, तब क्या होगा? उन्होंने बहुत चालाकी से इशारा किया कि वह इस सप्ताहांत झोपड़ी खरीदनी चाहती हैं, डोइकिंग के पास। उन्हें कुमारी मेबिन का मुँह बँद करने के लिए श्रीमती जी को पैसे देने पड़े। कुमारी मेबिन ने कुटिया का नाम, ''जंगली जानवर'' रखा। तबसे श्रीमती पैकलटाइड कभी जंगली जानवरों के शिकार पर नहीं गईं। उन्होंने अपने मित्रों को बताया कि शिकार में अचानक बहुत से भारी-भरकम खर्चे हो जाते हैं।